भविष्यद्वक्ताओं द्वारा मसीह के आगमन की भविष्यवाणी की गई

(बच्चों के शिक्षकों को अध्ययन संख्या पी 8 बी पढ़ना चाहिये)

1. मसीह संबंधी भविष्यवाणियों को पढ़ाने से पूर्व, प्रार्थनापूर्वक वचन का गहन अध्ययन कीजिए:

प्रार्थना: हे स्वर्गिय पिता, कृपया मेरे झुण्ड की सहायता कीजिये कि यह झुण्ड इस बात में आनन्द मना सके कि आपने कितनी अद्भूत रीति से प्रभु यीशु मसीह के आगमन से संबंधित अनेक भविष्यवाणियों को अक्षरश: पूरा किया है, और अब सहायता कीजिये कि यीशु के द्वितीय आगमन की आशा में यह झुण्ड आनन्दित रहे। आमीन।

पृष्ठभूमि पर टिप्पणियां

टिप्पणी 1: ''मसीह'' पुराने नियम में यह एक पदवी थी जो यहूदी लोग अपने राजा को देते थे। वे इस पदवी का प्रयोग उस आने वाले एक महान राजा के लिये भी करते थे जो भविष्य में एक दिन आएगा और सारे संसार पर राज्य करेगा। शब्द मसीह का अर्थ होता है ''अभिषिक्त जन'' जिसका अनुवाद आमतौर पर ख्रीस्त भी किया गया है। इस प्रकार यीशु मसीह नाम का अर्थ है, यीशु जिसका अभिषेक (मसीह) हुआ है।

टिप्पणी-2: यहूदियों का इतिहास लगभग 4000 वर्ष पुराना है जो उनके पूर्वज अब्राहम से आरम्भ हुआ था। उन्होंने लगभग 2000 वर्षो तक मसीह के आगमन की प्रतीक्षा की थी। जब वह मसीह आया तो अनेकों ने उस पर विश्वास किया, पर अधिकांश लोगों ने विश्वास नहीं किया। 2000 वर्षो के पश्चात् आजकल अनेक यहूदी विश्वास करते हैं कि यीशु ही उनका मसीह है, किन्तु अधिकांश यहूदी आज भी यह नहीं मानते हैं। ऐसे अविश्वासी यहूदी आज भी प्रतीक्षा में हैं कि उनका मसीह आने वाला है।

टिप्पणी-3: अनेक कारणों से हम यह जानते हैं कि बाइबल के वचन सत्य हैं और यीशु ही मसीह है : (1) यीशु ने अनेकों ऐसे कार्य किए जिन्हें केवल परमेश्वर ही कर सकता है। (2) यीशु के नाम में की गई प्रार्थनाएं परमेश्वर सुनता है। (3) हमने यीशु के आश्चर्यकर्म देखे हैं, और उसका दर्शन हमने किया है। (4) यीशु अन्य आत्माओं से सामर्थी है। (5) यीशु मसीह हमें आनन्द और शान्ति देता है। (6) यीशु के समान और कोई नहीं है।(7) एक विश्वासी के हृदय में वास करने वाला पवित्रात्मा उसकी आत्मा के साथ मिलकर सत्य की साक्षी देता है।

यीशु को प्रतिज्ञात मसीह मानने का एक और कारण यह है कि बाइबल धर्मशास्त्र में सैकड़ों वर्ष पूर्व भविष्यवाणियां की गई थीं जिनमें अधिकांश भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं। पुराने नियम में आने वाले मसीह से संबंधित लगभग 210 भविष्यवाणियां नबियों ने कीं, और नये नियम में प्रभु यीशु ने उनमें से लगभग 150 भविष्यवाणियां पूरी कर दी हैं, शेष भविष्यवाणियों के विषय में यीशु ने कहा कि वे अपने दूसरे आगमन के समय उन्हें पूरी करेंगे।

टिप्पणी-4: मसीही लोग, चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी हों, यह विश्वास करते हैं कि मसीह अपनी प्रतीज्ञा के अनुसार, यीशु मसीह के रूप में आ चुका है। इसके साथ ही मसीही जन यह भी विश्वास करते हैं कि एक दिन मसीह यीशु अपनी प्रतीज्ञा के अनुसार फिर जगत का न्याय करने को आने वाले हैं।

पुराने नियम के भविष्यात्मक कथनों की तुलना नये नियम में उनकी पूर्ति से कीजिये

- **यशायाह 9:6-7 की तुलना मत्ती 2:1-11 से करें** । अद्भूत बालक राजा का जन्म
- **मीका 5:1 की तुलना मत्ती 2:1-11 से करें** । यीशु का जन्म कहां होगा।
- **यशायाह 11:1-4 की तुलना मत्ती 5:1-12 से करें**। दीनों, नम्रों व दरिद्रों का सहायक।
- **यशायाह 53:4 की तुलना मत्ती 8:14-17 से करें**। लोगों की चंगाई के विषय।
- **व्यवस्था विवरण 18:15 की तुलना यूहन्ना 6:10-15 से करें**। अद्भूत रीति से लोगों को रोटी देने के विषय।

- **दानिएल 9:25-26 की तुलना मत्ती 24:14-25 से करें** । मसीह के दुबारा आगमन पर सताव।
- **जकर्याह 9:9 की तुलना मत्ती 21:1-11 से करें**। गधे पर बैठकर येरूशलेम में प्रवेश के विषय में।
- **यिर्मयाह 31:31-34 की तुलना लूका 22:17-22 से करें**। नई वाचा की स्थापना के संबंध में।
- **यशायाह 53:12 की तुलना लूका 22:37 से करें**। यीशु का अपराधियों के संग गिना जाना।
- **भजनसंहिता 22:14-18 की तुलना मत्ती 27:32-50 से करें**। यीशु का क्रूसीकरण।
- **जकर्याह 12:10 की तुलना यूहन्ना 19:34-37 से करें**। भाले से छेदा जाना।
- **यशायाह 53:7-8 की तुलना प्रेरि 8:29-35 से करें**। हमारे पापों के बदले यीशु का मारा जाना।
- **भजनसंहिता 16:9-11 की तुलना लूका 24:46-48 व प्रेरि 2:22-28 से करें**। पुनरूत्थान के संबंध में।

प्रभु यीशु के जीवन में अन्य बातें भी पूरी हुई जैसे 1 कुरिन्थियों 15:45 में यीशु को अंतिम आदम कहा गया। रोमियों 5:12-21 तथा 1 कुरिन्थियों 15:20-23, 45-50 पदों में अनेक समानताएं यीशु व आदम में बताई गई हैं। यीशु व आदम दोनों नई मानवजाति के मूल अगुवे थे और उन्होंने अपने कार्यो द्वारा अपनी जाति पर दूरगामी प्रभाव डाला है।

शैतान द्वारा परीक्षा में वे गिर गए

प्रभु यीशु परीक्षा में विजयी रहा

विशेष अध्ययन (अतिरिक्त समय लगाना होगा) यीशु व निम्नलिखित पुराने नियम के पूर्वजों के मध्य समानताएं व भिन्नताएं ज्ञात कीजिये :

आदम (उत्पत्ति अध्याय 2-3)

इसहाक (उत्पत्ति अध्याय 22)

युसुफ (उत्पत्ति अध्याय 37 व 39-48)

मूसा (निर्गमन व गिनती की पुस्तकें)

हारून (निर्गमन व लैव्यव्यवस्था की पुस्तकें)

यहोशु (यहोशु की पुस्तक)

बोअज़ (रूत की पुस्तक)

दाऊद (1 शामूएल 16-31 अध्याय तथा 2 शामूएल 1-24 अध्याय)

एलियाह (1 राजा 17-19 अध्याय तथा 2राजा 2 अध्याय)

2. अपने सहकर्मियों के सहयोग से आगामी सप्ताह की गतिविधियों की योजना बनाईए।

जब आप भेंट करने व साक्षी देने जाते हैं तो बताएं कि किस प्रकार भविष्यद्वक्ताओं द्वारा यीशु के विषय में पहले ही से भविष्यवाणियां की गई थीं, वे सब यीशु के जीवन में अक्षरशः पूरी हुई। जो लोग संदेह करते हैं उनकी शंकाओं का समाधान कर विश्वास दृढ़ करने में सहायता कीजिये। उनके लिये प्रार्थना कीजिये कि प्रभु यीशु स्वयं को उन पर प्रकट करे और वे आशीषों के भागीदार बन सकें।

- जो अगुवे आपसे प्रशिक्षण पा रहे हैं यदि उनके झुण्ड में ऐसे लोग हैं जो वचन की शिक्षा में दृढ़ होने की इच्छा रखते हैं, उन्हें यह अध्ययन-सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयत्न करें।
- यदि कोई विश्वासी जन बाइबल अध्ययन का इच्छुक है तो उसे भी दीजिये तथा उपरोक्त विशेष अध्ययन करने का परामर्श दीजिये अर्थात् यीशु व पुराने नियम के अगुवों के मध्य समानताएं व भिन्नताएं ज्ञात करने को कहिये।

3. अपने सहकर्मियों के सहयोग से आगामी आराधना सभा की योजना बनाएं।

विश्वासियों को पुराने नियम की भविष्यवाणियाॅ नये नियम में पूरी होने के विषय में अध्ययन करने का परामर्श दें, उनसे पूछते रहा करें कि किस प्रकार यीशु ने अपने जीवन से भविष्यवाणियों की पूर्ति की।

उन्हें स्पष्ट कीजिये कि भूतकाल में जो भविष्यवाणियाॅ पूरी हुई हैं उनसे हमें निश्चय प्राप्त होता है कि जो भविष्यवाणियां अभी पूरा होना शेष है वे भी अवश्य पूरी होंगी।

यीशु व उपरोक्त सूची में दिये गये पुराने नियम के अगुवों में से किसी एक के विषय में बताएं कि उनके मध्य क्या समानताएं व क्या भिन्नताएं पाई जाती हैं।

यदि ऊपर दी गई चार टिप्पणियाॅ किसी जन के लिये उपयोगी जान पड़ती हों तो आराधना के मध्य उन्हें बताएं।

बच्चों ने जो बातें तैयार की हों उन्हें वे युवाओं के समक्ष प्रस्तुत करें।

प्रभु-भोज विधि मनाने के लिये पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11:26, तत्पश्चात् बताएं कि मसीही लोग पिछले दो हज़ार वर्षों से रोटी और दाखरस लेते आ रहे हैं और प्रभु के द्वितीय आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि वह आए और शेष भविष्यवाणियों की पूर्ति करे।

सब कंठस्थ करें : लूका 24:27, "तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया।"

अंत में दो दो या तीन तीन व्यक्तियों के छोटे समूह बनाकर परस्पर एक दूसरे के लिये प्रार्थना करें, यीशु के संबंध में जो भविष्यवाणियाॅ प्राचीन समय में की गई हैं उन पर विचार-विमर्श करें, आपने जो योजनाएं बनाई हैं उन्हें पक्का करें तथा एक दूसरे को प्रोत्साहित करें।